Sanskrit Honours
Part - II
Paper - IV

Kanak Lata Kumari

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

प्रश्न- काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्क तत्र श्लोक चतुष्टयम्॥
इस कथन(उक्ति)की समीक्षा करें।

महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य के मूर्धन्य कवि एवं नाटककार है। उनके द्वारा रचित नाटकों में 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' ही उनकी नाट्य प्रतिभा का सर्वोत्तम परिचायक है। महाकवि ने अपने इस नाटक में घटनाओं का संयोजन करने में असाधारण प्रतिभा का परिचय दिया है। साथ ही इसमें पूर्ण स्वाभाविकता भी विद्यमान है। इस सर्वश्रेष्ठ उक्ति से संबंधित चार श्लोक में चार भाग हैं (1) काव्येषु नाटकं रम्यम् (2) तत्र रम्या शकुन्तला (3) तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः (4) तत्र श्लोक चतुष्टयम्।

(1) काव्येषु नाटकं रम्यं - अर्थात् सभी प्रकार के काव्यों में नाटक ही सर्वश्रेष्ठ है। इसका मुख्य कारण यही है कि अहृदयों को सहृदय बनाने की पूर्ण क्षमता नाटक में है।
भरतमुनि के अनुसार - "नाट्य में समस्त शास्त्रों तथा कलाओं का पूर्ण समावेश हो जाता है। उनका कथन है कि कोई भी ज्ञान-शिल्प विद्या योग अथवा कर्म ऐसा नहीं है जिसका

दर्शन नाटक में न होगा वो हो। अतः सभी प्रकार के काव्यों में नाटक ही श्रेष्ठ है।

(2) तत्र स्या शकुन्तला — अर्थात् उन नाटकों में 'अभिज्ञानशाकुन्तलम' नाटक ही सर्वश्रेष्ठ नाटक है। महाकवि की इस रचना को विश्व साहित्य में सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त है। महाकवि की काव्य-प्रतिभा का यह सर्वश्रेष्ठ निदर्शन है। विश्व के सभी सहृदयों के हृदय इससे प्रभावित हुये हैं। अमेरिका के प्रसिद्ध विद्वान राइडर तथा तथा जर्मन विद्वान कवि गोटे आदि अभिज्ञानशाकुन्तलम का अध्ययन कर आनन्द विभोर हो गए और उन्होंने मुक्तकंठ से इसकी प्रशंसा की। भारतीय आलोचकों तथा विद्वानों ने भी यह स्वीकार किया है कि भारतीय वाङ्मय में सर्वाधिक रम्य तथा मनोहरी एवं सहृदय पुरुषों के हृदयों को आह्लाद प्रदान करने वाला अगर कोई काव्य है तो वह अभिज्ञानशाकुन्तलम ही है। अभिज्ञानशाकुन्तलम में महाकवि ने मानव हृदय का सजीव-चित्रण किया है। आलोचकों के किसी भी मापदण्ड से इसकी परीक्षा करें तो यह नाटक सभी मापदण्डों से खरा उतरता है। अतः तत्र स्या शकुन्तला की उक्ति पूर्णतया सार्थक सिद्ध होती है।

(3) तत्रापि चतुर्थाङ्कः - इस अभिज्ञानशाकुन्तलम् में भी सर्वाधिक आकर्षक तथा हृदयहारी चतुर्थ अंक है। इस अंक में पिता गृह से विदा होकर शाकुन्तला के पतिगृह जाने का वर्णन है। यह दृश्य अत्यन्त मर्मस्पर्शी तथा कारुणिक है। शाकुन्तला के विरह के कारण समस्त तपोवन वासी दुखी हैं। अतः इस प्रकार के भाव से समन्वित होने के कारण इसकी महत्ता स्वीकार की गई है।

(4) तत्रापि श्लोकचतुष्टयम् — अर्थात् अभिज्ञानशाकुन्तलम् के इस अंक में भी प्रसिद्ध चार श्लोक अत्यन्त उत्तम तथा उपादेय है।
ये चार श्लोक निम्नलिखित है —

1) यास्यत्यद्य० --- 4/6 (2) शुश्रूषस्व गुरून्० --- 4/18
3) अस्मान् साधु० 4/17 (4) गमिष्यति० --- 4/20

यास्यत्यद्य० में गमन विषयक की सर्वोत्तम प्रवाह है। शुश्रूषस्व० में विदा होती हुई पुत्री के लिये पिता द्वारा सर्वोत्तम उपदेश है।
अस्मान् साधु० - में कन्या पक्ष की ओर से कन्या के पिता द्वारा वर के लिये संदेश है।
इस श्लोक में कन्या के पिता की हार्दिक भावनाओं का सुन्दर चित्रण किया गया है। गमिष्यति० में शाकुन्तला को आश्वासन दिया गया ताकि वह पतिगृह जाकर सुख से रहे।

Scanned with CamScanner